श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान का मुखपत्र

Regd - GUJMUL00665

यथार्थ मार्ग

Email : info@gopinathji.org Visit us : www.gopinathji.org facebook : ShreeGopinathji What's app - 8141054545

वर्ष – प्रथम ● अंक – अप्रैल २०१८ ● शुल्क मासिक २०/ वार्षिक २००/ विदेश – USA $ 35, UK £ 30 ● कुल पृष्ठ ८ पृष्ठ क्रं. १

संस्थापक एवं मार्ग दर्शक – पुष्टि सिद्धान्त मर्मज्ञ पू श्री व्रजेश कुमारजी शास्त्रीजी सम्पादक – वेदान्ताचार्य पू.श्री गिरिराजजी शास्त्री

सम्पादकीय

श्री गिरिराजजी शास्त्री

जैसे कि पिछली बार कहा गया था पुनः दोहराना चाहुँगा कि हमारी मान्यताओं में आमूल परिवर्तन संभव नहीं किन्तु सिद्धान्तों को बिना तोडे-मरोडे देश-काल-परिस्थिति अनुसार जो योग्य परिवर्तन हैं उन्हें भावी पीढी को ध्यान में रखते हुए शनैः शनैः स्वीकारे जाय तो ही धर्म-संप्रदाय और यथार्थ मार्गो को संभाला और सुरक्षित रखा जा सकता है यह गहराई से अनुभूत हुआ चिंतन है जिसे नम्र निवेदन के रूप में सुज्ञजनों एवं संत-आचार्य-विद्वद् जन धर्म प्रेमियों के सन्मुख रख रहा हूँ जिसके लिये यथायोग्य सूचन - विचार -परामर्श या अभिप्राय एवं किसी ठोस यथार्थ निश्कर्ष का आकांक्षी हूँ। पर आज कल वचन - रचन में एकता धर्मज्ञों में भी नहीं होने के कारण बडी डांवा डोल स्थिति दृश्यमान हो रही हैं , अतः अध्ययन एवं जो अध्ययन किया है उसका चिंतन परमावश्यक है ।आज ही एक अखबार में एक सर्वे किया गया कि विश्व में मात्र १० प्रतिशत लोग ही धर्म के प्रति आस्था रखते हुए मंदिर या धार्मिक विषयों में हिस्सा लेते हैं और खास कर उनमें ३५ की आयु के ऊपर के लोग होते हैं । हमारी युवा एवं बाल पीढी धर्म की क्रिया और धार्मिक स्थानों से उतना लगाव नहीं रखती और जाना पसंद नहीं करती। और यही वजह है कि अब युवा पीढी में सहन शक्ति का अभाव दिखाइ पड रहा है एवं डिप्रेशन -मानसिक तनाव ईत्यादि जल्द आ जाता है , हमारी पूर्विय भगवद् श्रद्धा ही हमारे मजबूत मन एवं हृदय का कारण थी और भारत विश्वगुरु था अब आगे हमारी जिम्मेदारी है अतः करबद्ध प्रार्थना है सभी धर्मज्ञ धर्म के उच्च सिंहासन पर बिराजमान सभी को विद्वत् जनों को कि अभी सोचें और यथार्थ प्रगटकर जन मानस तक उस यथार्थ को सरल सहजतया कैसे पहुँचाया जाय यह निश्चित करें अन्यथा अगले कुछ वर्षों के पश्चात् विदेशी हमें भारत को धर्म या ग्रंथ पढाकर हमें समझाने आयेंगे और हम उसी भाषा में समझेंगे और मान सकेंगे यह दिन ज्यादा दूर नहीं पर तब हम क्या और कैसा समजेंगे ये तो प्रभु ही जानें। अतः अभी से ही हम अपने धर्म संस्कृति के प्रति जागृत हों और हमारे बच्चों को यह अमूल्य विरासत देने हेतु सर्व प्रथम हम इसके प्रति अभिज्ञान प्राप्त करें यह मेरी सभी सुधि पाठकों से करबद्ध नम्र विनंती है , सुज्ञेषु किं बहुना ।।

आचार्य वचनामृत

पू. पा. वैष्णवाचार्य गो. १०८ श्रीयोगेश्वरजी महोदयश्री

सब तज हरि भज

જગદ્ગુરૂ શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્ય મહાપ્રભુ પ્રવર્તિત શ્રીશુદ્ધાદ્વૈત પુષ્ટિમાર્ગ સંપૂર્ણ ભગવદ્ રસ પ્રધાન છે અને ભગવદ્ રસ ની પ્રાપ્તિ કોટિમાં વિરલ એવા મહાનુભાવોને જ પ્રાપ્ત થાય છે . ચોર્યાસીલક્ષ યોનિઓમાં મનુષ્ય યોની સર્વશ્રેષ્ઠ છે અને એ મનુષ્ય યોનિમાં પણ વૈષ્ણવ થવું એનાથી પણ શ્રેષ્ઠ છે. એ વૈષ્ણવી જીવનમાં સાચી વૈષ્ણવતા પ્રાપ્ત કરી ભગવદ્ રસની પ્રાપ્તી કરવી એ સર્વથી શ્રેષ્ઠ છે એટલા જ માટે હરિરસ (ભગવદ્ રસ) ની પ્રાપ્તિ તો કોઇ એવા વિરલ ભગવદીય ને જ પ્રાપ્ત થાય છે.

કેમકે ભગવદ્ રસ સ્વયંમાં પરમાનંદ સ્વરૂપ છે અને એથી એની અનુભૂતિ વિશેષ સ્વરૂપે ભગવદ્ સેવા કરતાં કરતાં થાય છે . ભગવદ્સેવા નું સ્વરૂપ સ્વયં તો રસાત્મક છે જ પરંતુ પોતાના સેવ્ય સ્વરૂપની સેવા કરનાર ભગવદીયજનને પણ સેવાની તલ્લીનતાની ક્ષણોંમાં એ ઉત્તમાતી ઉત્તમ ભગવદ્રસની પ્રાપ્તિ સ્વયં ભગવાન અત્યંત કૃપા કરીને કરાવે છે અને એ જીવને એની સમસ્ત આધિ-વ્યાધિ અને ઉપાધિઓ માંથી નિવૃત્ત કરી રસાનંદનું દાન કરે જ છે. અને એવે સમયે એ સેવક જીવ ને સેવા કરતાં કરતાં એક સમય એવો આવે છે કે સોહિની (બુહારી) અને મંદિરવસ્ત્ર (પોતુ) કરતાં કરતાં દેહાધ્યાસ છૂટી જાય છે .

દેહાધ્યાસ એટલે દેહ માં રહેલી અહંતા ને મમતાની વૃત્તી .આ દેહ પ્રભુએ આપેલો છે અને એ એની સેવા અર્થે જ હોઇ શકે એવું મનમાં વિચારી પ્રભુની સેવા અર્થે જ એ દેહ નો ઉપયોગ કરવો. એથી જેમ ચંદન ઘસાઇ જાય છતાંય સુગંધ આપે, અગરબત્તી સળગી જાય છતાંય સુગંધી આપે તેમ આ આપણા દેહ ને પ્રભુની સેવામાં તત્પરતા રાખી ઘસી નાખીયે ત્યારે જ દેહાધ્યાસની નિવૃત્તી થાય અને પ્રભુ પ્રેમની સુગંધ શરીર અને સર્વેન્દ્રિય થી આવે. દેહ વત્તા અધ્યાસ એટલે દેહાધ્યાસ. દેહ એટલે શરીર અને અધ્યાસ એટલે અજ્ઞાન. શરીર માટેનું અન્યથા જ્ઞાન, શરીરમાટે મિથ્યા જ્ઞાન,શરીર માટે અપૂરતું જ્ઞાન,અને શરીર માટેનું અયોગ્ય જ્ઞાન, એ દેહાધ્યાસ ની ઉત્પત્તી કરે છે .

એટલા જ માટે શિક્ષાસાગર મહાનુભાવ શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુએ પોતાના શિક્ષાપત્ર ગ્રંથમાં હરિરસની પ્રાપ્તિ માટે દેહાધ્યાસની નિવૃત્તી ને પણ એક કારણ બતાવ્યું છે . દેહાધ્યાસ ની નિવૃત્તી માટેનો ઉપાય સાધન કક્ષાએ વિચારિયે તો શ્રીઠાકોરજીના મંદિરની સોહિની કરવી, શ્રીપ્રભુના મંદિરનું મંદિરવસ્ત્ર કરવું, શ્રીઠાકોરજી ના વસ્ત્રપ્રક્ષાલન કરવા અને શ્રીઠાકોરજી ના બર્તન માંજવા. આનાથી ઘણી જ જલ્દી આપણા દેહની શુદ્ધિ થાયછે , અને ઇનદ્રિયોની શુદ્ધિ થાય છે , પ્રાણોની શુદ્ધિ થાય છે તેમ જ અંતઃકરણની શુદ્ધિ થાય છે અને નિર્મળ અંતઃકરણ માં ભગવદ્ ભાવ અને ભગવદ્ ભાવના સ્વરૂપે ભગવદ્રસ રેલાય છે અને દેહ-ઇન્દ્રિય-પ્રાણ-અંતઃકરણ માં પ્રસરી મન સહિત આત્મા ને ભગવદ્રસરૂપ બનાવી દે છે .

यथार्थ

श्री गिरिराज शास्त्री

क्या है यथार्थ ? और क्यों आवश्यक है अब ?

अंततः हमें धर्म के उस मूल तत्व रहस्य और भाव को ही पकडना हैं, क्योंकि बिना किसी भी साधना के रहस्य और मूल तत्व को समझे या उस सदगुरु कि साधना प्रणाली की असली महत्ता को जाने बिना मात्र अनुकरण तो भेड बकरियों की तरह अन्धानुकरण होगा जो कि नीचे गिराने वाला होगा । अतः आप जिस किसी गुरु के पास साधना जिस किसी भी मार्ग की कर रहे हो अन्धानुकरण ना करे और यथार्थ मार्ग का भी अन्धानुकरण न करें ।

यह दिव्य प्रेम स्वरूप आनंद परमानंद स्वभाव पूर्ण पुरुष श्रीगोपीपति कन्हैया का सहज यथार्थ प्रेम का मार्ग है तो इसे स्वयं जानें पहचानें और जब तक स्वयं अनुभूत न कर लें तबतक कर्मकांडो जैसी प्रेम विहीन क्रियायो में फसकर अन्धानुकरण न करें ।

प्रेम हरि को रूप है त्यों हरि प्रेम स्वरुप एक ह्वे द्वे ऐसे लसे ज्यों सूरज अरू धूप इस प्रेम स्वरूप हरि को अपने अन्तस्तल में स्वाधिष्ठान सहित सभी चक्रों में ही पा सकते हैं ।

उस परमेश्वर के प्रति बहुत सारे लोगों ने बहुत सारी विचारधाराए बना रखी हैं और अनुभूति सबकी अलग अलग है, पर जैसी जिसकी योग्यता और समझ के साथ साधना होती है उस साधना के फल स्वरुप सदगुरु की कृपा से वेसे इश्वर के दर्शन कर सकते हैं । किन्तु वेदों ने, शास्त्रों ने, सदगुरुवर्य ने इससे आगे परम स्वरुप, परमानन्द स्वरूप, सहज, सत्य स्वरूप, नित्य उत्सव और नाचता गाता पूर्ण पुरूष है वह परमेश्वर ऐसा जताया समझाया और महसूस भी करवाया हैं ।

तो आइये इस परम प्रेम के आनंद को हम भी समझे नाचते गाते उस सहज साधना से अन्तस्तल के सभी चक्रों को जगाये और परमानंद को अनुभुत करें, आगे के अंको में इस साधना के सरल सहज तरीके जानेंगे जिससे वह परम आनंद – प्रेम रूप हरि – हृदय मन को अपनी उस ऊर्जा से भर दे..... क्रमशः

Devine Thoughts

SAMARPAN

Pujya Shri Brijlata Bahuji

As all the parts of a tree are meant for the dedication continues along with the course of their generation, in the same way in the case of the loving devotees whatever is there with them and whatever is acquired by them everything is meant for the dedication to *Bhagavan*. There is not iota of any idea regarding their own enjoyment. If the idea of dedication is removed even for a moment with regard to a thing and for the matter of that for the moment concerned, the idea of being the enjoyer with reference to the thing concerned gets automatically generated in us. This very inclination towards enjoyment is know in other words as a demoniac feeling and so wherever there is the attitude of dedication only, the cherished devotion to the *Bhagavan* gets steady. In case of lustful passion for the enjoyment, even the fancy of the loving devotion towards *Bhagavan* can never be there by any stretch of imagination.

Taking all these points into consideration, our great guru Shree *Vallabhacharyaji* has imparted to us such a grand concept of "dedication" . in it there is no ego for the sense of agency nor any desire, or expectancy at all or for the enjoyment of a thing.

In case of the various types of aims, gift, charity, renunciation, rituals, propitiatory rites meant for deities, the inclination of enjoyment or ultimately even the ego for the sense of agency do persist, whereas none of them remain there at all in the dedication taught by Shree Vallabhacharyji.

श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान

Visit us at www.gopinathji.org

यथार्थ संपादक मंडल

श्रीमती प्रभाबेन शास्त्री
श्रीमती कल्पना कटारे
कु. निमिषा बेन पारेख

यथार्थ व्यवस्थापक मंडल

श्रीमती गुंजनबेन शास्त्री
श्री उमेश भाई वैष्णव

संस्थान के कार्यकलाप

- यथार्थ मार्ग (मासिक पत्रिका)
- ओडियो प्रवचन केसेट, पुस्तक प्रकाशन, और वितरण
- गौसेवा
- अशक्त आर्थिक तकलीफ वाले व्यक्तियों की सहायता
- सामान्य स्थिति वाले छात्रों को मदद
- सत्संग सत्रो का आयोजन

अशक्त, आर्थिक तकलीफ वाले, अनाथ एवं ब्राह्मण हेतु

- भोजन सेवा
- वस्त्र सेवा
- विद्या दान
- औषधि सेवा
- अन्न दान
- अनन्त योजना

वड़ोदरा कार्यालय का समय
(सुबह ११ से शाम ५)

सम्पर्क – मोबाईल
98255 13317, 9998107541

ट्रस्ट र.नं. (ई–४३७५(मेहसाणा) ता. १६ मार्च २००५)
इन्कमटेक्स करमुक्ति का लाभ भी उपलब्ध है
CIT/GNR/80G(5)/PTN-37/07-08/3233/12-13

व्रतोत्सव टीप्पणी माह अप्रैल

दि.	वार	तिथि	विगत
	चैत्र कृष्ण		
१	रवि	१	इष्टि.
७	शनि	७	श्री विट्ठलनाथ प्रभु (नाथद्वार) का पाटोत्सव ।
१२	गुरू	११	वरुथिनी एकादशी व्रत, जगद्गुरू श्रीमद्वल्लभाचार्य चरण श्रीमहाप्रभुजी का (व्रज वि.सं. १५३५) प्रादुर्भाव महोत्सव वल्लभाब्द-५४१ का प्रारंभ ।
१२	गुरू	११	सूर्य अश्विनी एवं मेषमें प्रातः ८-१४ से मेष संक्रान्ति, प्रातः ८-१४ से मध्यान्ह १२-१४ तक प्रभुको सतुवा भोग धरें एवं २-१४ तक दान-जाप-पुण्यादि कर लेवें ।
१६	सोम	३०	इष्टि सोमवती दर्श अमावस्या ।
	वैशाख सुद		
१८	रवि	३	अक्षयतृतीया, चन्दन यात्रा, जल कुंभदान, आजसे दो मास तक विशिष्ट शीतोपचार करने
२६	रवि	११	मोहिनी एकादशी व्रत ।
२९	रवि	१४	श्रीनृसिंह जयंती व्रत स्वाति युवत जन्म समय होने से आज।
३०	रवि	१५	वैशाख स्नान समाप्ति, इष्टि ।

साभार-वल्लभ विट्ठल ग्रंथ प्रकाशन मंडल ट्रस्ट

The Story of Bhakt Prahlad

Smt. Jagruti Ban -Gohil (Chicago)

The story of a divine kid name Prahlad. He was the son of a king 'Hiranyakashyap' who considered himself as God after getting boon from God Brahma that he would not be vanquished by any weapon, neither outside nor indoors, not by man nor beast. He began believing that he was, indeed, invincible.

Prahalad was a devotee of God Vishnu and that disturbed his father to the extent that he tried to kill him a lot of times but he could not. He even tries to burn him alive with Holika but Holika died as she misused her boon and Prahalad survived. Finally, when 'Hiranyakashyap' decided to kill his son himself, Hiranyakshipu thundered, "Where is this God of whom you sing praises?" Prahlad calmly replied, "Everywhere."

The Asura king challenged him, "Is he in this pillar, too?" Prahlad replied, "Of course." The demon king then brought down his mace on the pillar with all force.

God Vishnu appeared in Narshima avatar (a creature that was half man and half lion) and killed him. Unknown to Hirankshipu, the pillar chosen by him was located in the threshold, neither indoors nor outdoors. Not by any weapon, neither in a day nor in the night, neither on the earth nor in the sky, neither inside of the house nor outside, The time was the twilight hour midnight, neither day nor night. And his nemesis was neither man nor beast, but both!

Narasimha affectionately blesses young Prahlad for his steadfast devotion - despite a powerful father and a difficult trial through fire.

The legend of young Prahlad is so inspiring that more people refer to him "Bhakta Prahlad".

Moral:

The story of 'Bhakt Prahlad' will teach your kids that, God is everywhere. If one chants God's Name with devotion, He saves one in all circumstances. Also, teach the virtues of faith, bravery and tolerance.

DHARM PUZZLE

Find the words from the list in the below box :

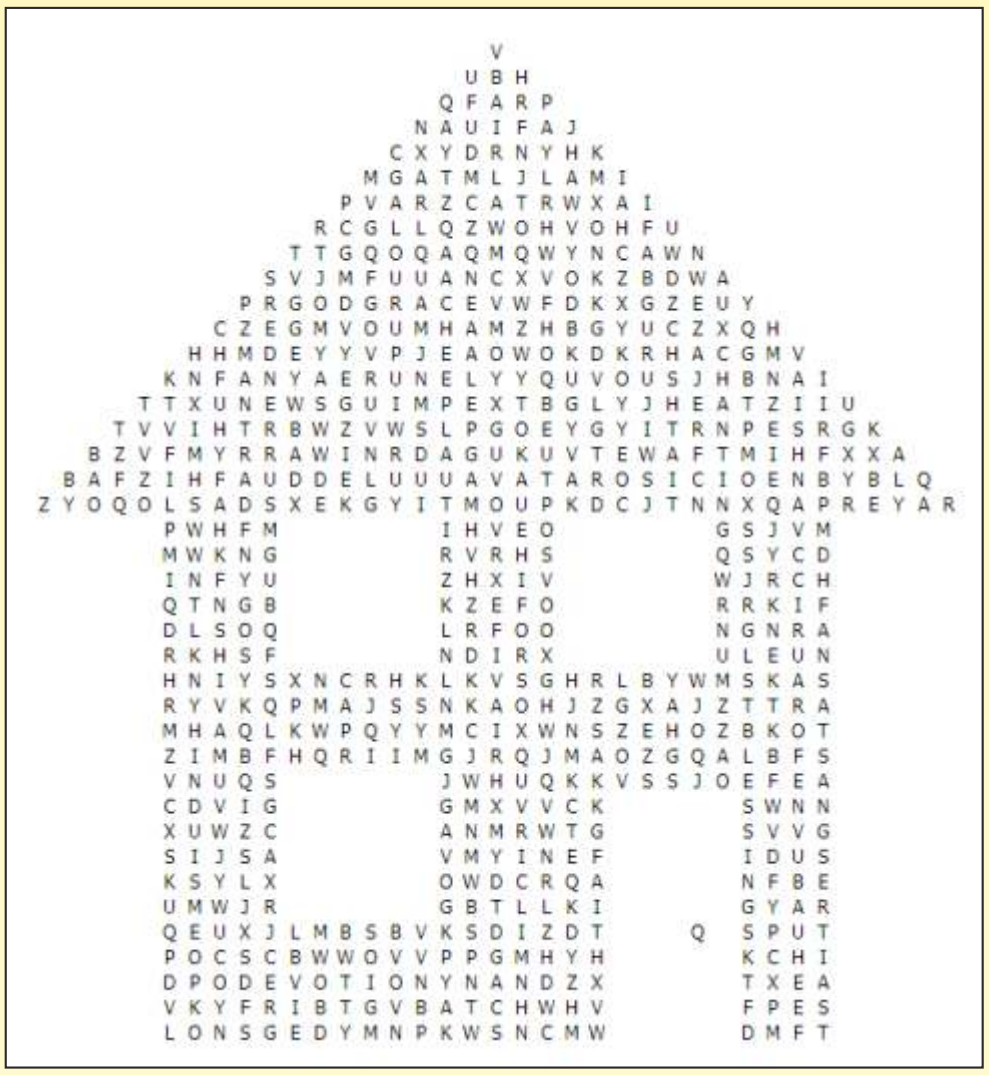

WORD LIST :

AVATAR
BLESSING
BRAHMA
CHANTING
DEVOTION
DIVINE
FAITH
GOD GRACE
GURUJI
HINDUISM
ISHWAR
KRISHNA
MANTRA
PREYAR
RITUAL
SATSANG
SHIVAM
SURRENDER
VAISHNAV
VISHNU

संस्थान की आध्यात्मिक गतिविधियाँ

श्री यमुना महरानी का गुणगान महोत्सव

श्री यमुना महरानी का गुणगान महोत्सव कारेलीबाग की श्रीनागदमन श्रीनाथजी हवेली में श्री यमुनामहरानी के प्राकट्य उत्सव के निमित से हुआ । यहाँ पू.पा.गोस्वामी १०८ श्रीमथुरेश्वर जी महाराज श्री के आशीर्वचन और पू.पा.गोस्वामी १०८ श्री योगेशश्वर जी महोदयश्री के आशीर्वचन सह उत्सव और आपश्री की मंगलमय सन्निधि में गुरुजी पू. श्रीगिरिराज जी शास्त्रीजी के श्रीमुख से रशेश्वरी श्री यमुनामहारानी के गुनगान से नव संवत्सर की बेला में भक्तों को अपार आनंद हुआ ।

तिहारो दरस मोहे भावे श्रीयमुनाजी ।
श्री गोकुल के निकट बहत हैं
लहरन की छबि आवे ।। १ ।।
सुख देनी दुख हरनी श्रीयमुनाजी
जे जन प्रातःउठ न्हावे ।।
मदनमोहनजु की खरी है प्यारी पटराणी जु कहावे ।। २ ।।
बृंदाबन में रास रच्यो हैं मोहन मुरली बजावे ।।
सुरदास प्रभु तिहारे मिलन कुं वेद विमल यश गावे ।। ३ ।।

गुडअर्थ भक्तिसागर भजन मंडल, चेम्बुर सिंधी सोसायटी के
जय श्रीकृष्ण

महेन्द्र कुमार कनकराय महेताजी के
जय श्रीकृष्ण

BOOK POST PRINTED MATTER

Printed & Published By Giriraj V. Shastri On Behalf Of Owner Shree Gopinath Adhyatmik Sansthan Trust (regd. No. E4375) And Printed At Shraddha Screen Printing, C/o Dharmit D. Parikh, 1930, Pitta Ni Pole, Opp. Govardhannathji Temple, Sarangpur Chakala, Sarangpur, Ahmedabad-380001 And Published At Giriraj V. Shastri , E/294, Rajlakshmi Society, Opp. Baroda Heart Institue,Old Padra Road, Vadodara-390027. Editor Giriraj V. Shastri